



एम.के.इंटरनेशनल आई बैंक का त्रैमासिक न्यूजलेटर

♦ वर्ष: 6 ♦ अंक: 1 ♦ माह: जनवरी से मार्च, 2017



नेत्रदान जागरूकता अभियान :- एम.के. इंटरनेशनल आई बैंक एवं महावीर इंटरनेशनल, इंदौर शाखा के संयुक्त तत्वावधान में कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया, पीथमपुर में संकल्प पत्र भरवाए गए।

काउंसलर नेत्रदान-अंगदान में महती भूमिका अदा करेंगे

यदि कोई मरीज अस्पताल में भर्ती है और उसके जीवित बचने की संभावनाएं न के बराबर हैं। इस स्थिति में अस्पताल के चिकित्सक मरीज के परिजन से अंगदान नेत्रदान के बारे में बात कर उन्हें अंगदान के लिए प्रेरित करेंगे। इसके लिए हर अस्पताल में काउंसलर नियुक्त किए जाएंगे।

दरअसल, ब्रेन डेड मरीजों के ऑर्गन ट्रांसप्लांट करने के लिए केंद्र सरकार ने नए नियम जारी किए हैं। ह्यूमन ऑर्गन ट्रांसप्लांट एक्ट (होटा) के तहत अस्पताल में भर्ती ब्रेनडेड मरीजों के परिजनों को ऑर्गन डोनेशन के बारे में बताएंगे। केंद्र सरकार का मानना है कि इस कदम से किसी जरूरतमंद मरीज को नई जिंदगी मिल सकेगी। इस मामले में नेशनल ऑर्गन एंड टिशू ट्रांसप्लांट एसोसिएशन (नोटो) के डायरेक्टर डॉ. बिमल भंडारी का कहना है कि अस्पतालों में ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर की नियुक्ति अनिवार्य की जाएगी। ये कोऑर्डिनेटर अस्पताल में भर्ती प्रत्येक ब्रेनडेड पेशेंट के परिजन को अंगदान का प्रस्ताव देंगे।

इंदौर में भी हर अस्पताल को देना होगी ब्रेन डेथ की जानकारी:- सरकारी हो या निजी, यदि किसी भी अस्पताल में कोई ब्रेन डेथ मरीज है, तो अस्पताल प्रबंधन को इसकी सूचना तत्काल इंदौर सोसायटी फॉर ऑर्गन डोनेशन या एमजीएम मेडिकल कॉलेज को देनी होगी। यह फैसला कमिशनर संजय दुबे ने ऑर्गन डोनेशन सोसायटी की बैठक में लिया। साथ ही अब हर अस्पताल को आय.सी.यू. में भर्ती मरीजों की संख्या स्वास्थ्य विभाग को बताना होगी ताकि अंगदान, नेत्रदान को और अधिक बढ़ावा मिल सके।

इससे ब्रेन डेथ मरीजों को अंगदान को लेकर उनके परिवार से समय पर संपर्क किया जा सकेगा। संबंधितों और मेडिकल छात्र-छात्राओं को ब्रेनडेथ सर्टिफिकेशन कैसे जारी किए जाए, इसकी संपूर्ण जानकारी दी जाएगी। भारत में हर वर्ष करीब 2 लाख मरीजों को किडनी, 50 हजार लिवर और 11 लाख मरीजों को नेत्र (कॉर्निया) की जरूरत होती है, लेकिन यहां अंगदान का प्रतिशत अभी भी सिर्फ 0.01 है। जबकि पश्चिमी देशों में यह 70 से 80 प्रतिशत है। जनजागरूकता ही एक मात्र विकल्प है, जिससे अंगदान नेत्रदान को बढ़ावा मिल सकेगा। ■

संपादकीय

क्या हैं, भारत स्वच्छता अभियान के निहितार्थ

प्रधानमंत्रीजी द्वारा आहूत भारत स्वच्छता अभियान एक ऐसा दूरगामी प्रभावों वाला अभियान है, जो आने वाले दशकों में देश की तस्वीर बदल देने वाला सिद्ध होगा। हमारे देश में होने वाली बीमारियों में सबसे ज्यादा प्रतिशत संक्रमणकारी रोगों का है। हर साल लगभग 70 प्रतिशत रोग प्रदूषित पानी और गंदगी के कारण होते हैं। यह भी सच है कि संक्रमणों के सर्वाधिक शिकार गरीब लोग होते हैं, जिनका कुपोषण और असन्तुलित भोजन के चलते रोग प्रतिरोधी तंत्र कमजोर होता है। इसके अतिरिक्त गंदे परिवेश में रहने के कारण उनका रोगाणुओं से सामना रोजमर्रा की बात होती है। उनके बच्चों का बचपन भी उसी गंदे परिवेश में गुजरता है, वे जब उस वातावरण में खेलते हैं तो तेज हुई श्वास प्रश्वास रोगाणुओं को भीतर ले जाने का कारण बन जाती है। गंदगी में ही मच्छरों को खूब पनपने का मौका मिलता है। यही कारण है कि गरीब और गरीबों के बच्चों को उल्टी-दस्त-पेचिश आदि के पेट रोग, पोलियो, मलेरिया, सर्दी, जुकाम, न्यूमोनिया, टीबी आदि अपना शिकार बनाते रहते हैं, इसका सीधा सीधा प्रभाव उनकी कमाई पर पड़ता है। अधिकांश गरीब वर्ग दैनिक वेतनभोगी होते हैं। इस सच के चलते बीमारी के दौरान उनका जीविकोपार्जन बिलकुल ही बन्द हो जाता है और थोड़े बहुत संचित धन का खर्च रोग के उपचार में शुरू हो जाता है, उन्हें अक्सर कर्ज लेना पड़ता है, जिसके कारण गरीबी उनको मजबूती से जकड़ लेती है। उनका काम नहीं करना देश के विकास में भी बाधक बन जाता है। केवल ट्यूबरक्लोसिस की ही बात करें तो 17 करोड़ कार्य दिवसों का नुकसान देश को उठाना पड़ता है। इसके अतिरिक्त 13000 करोड़ रुपयों की राशि सरकारी तौर पर अकेले इस रोग पर खर्च हो जाती है। हर साल एक लाख पति अपनी रोगग्रस्त पत्नी को घर से निकाल देते हैं, लिहाजा उनके बच्चों का जीवन अनाथ जैसा ही हो जाता है, वे न तो पढ़ पाते हैं और न ही सुपोषित रह पाते हैं, सीधे शब्दों में कहें तो उन बच्चों का जीवन नारकीय हो जाता है। आंखों के संक्रमण के लिए भी दूषित जल, प्रदूषित वायु और गंदगी जिम्मेदार हैं, जिनके उपचार के अभाव में आंखों की दृष्टि कुप्रभावित होती है, जो उनकी पढ़ाई में बाधक बन जाती है। यदि स्वच्छता अभियान सफल रहा तो हमारे गरीब नौनिहाल आंखों के घातक संक्रमण से बच सकेंगे। संक्षिप्त में कहें तो यदि स्वच्छता अभियान सफल होता है तो देश संक्रामक रोगों से मुक्ति की दिशा में अग्रसर होगा और गरीबों की गरीबी उनसे मुंह मोड़ना शुरू कर सकती है।

-डॉ.मनोहर भण्डारी, मानद संपादक

एम.के.इंटरनेशनल आई बैंक द्वारा मार्च 2017 तक 6338 कॉर्निया संकलित